महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१३/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। यह सेवा परमात्मा गुरुजी को समर्पण है।

सभी आत्माएँ अपने मूल स्वरुप में बैठें... मूल स्वरुप आत्मा का सत्य स्वरुप है... उस स्वरुप को देखें... चमकता हुआ सितारा... अनुभव करें अपने मूल स्वरुप को... देखिए अपने मूल स्वरुप को... अति सुन्दर, तेजस्वी... यह मूल स्वरुप का अनुभव कीजिए... यही आपका सत्य स्वरुप है... यही आप हो... इसे पक्का कीजिए... मूल स्वरुप की अनुभूति में उतरते जाएँ...

जितना जितना अपने इस सत्य स्वरुप को देखेंगे उतना वह पक्का होता जाएगा। अपनी बुद्धि से आप जो देखते हो, वही सत्यता में उतरता है। पर जब आत्मा संपूर्ण होश में रहके अपनी बुद्धि से अपने स्वरुप को देखेगी तोही वह अपना स्वरुप पक्का हो जाएगा, क्योंकि मायावी परतें बुद्धि को भटकाएँगी। अगर आत्मा अपने स्थिति में नहीं होगी तो बुद्धि जो दिखाएगी वह मायावी अस्तित्व उसे दिखाता है, ना कि आत्मा। इस फ़र्क को समझो। आत्मा कि बुद्धि बहुत पवित्र है। उसे जागृत करने के लिए सबसे पहले आत्मा को जागृत होना पड़ेगा, आत्मा को अपने मूल स्वरुप में आना होगा, जितना जितना आत्मा अपने मूल स्वरुप में आती जाएगी, उतना उतना आत्मा के सभी गुण-शक्तियाँ, मन-बुद्धि-संस्कार अपने मूल स्वरुप में आते जाएँगे।

आत्मा मालिक है अपने कर्मेंद्रियों की, पर मालिक को, अपने स्थिती में सबसे पहले आना होगा, मालिक को, अपनी सीट पर सेट रहना होगा। जब मालिक, अपने सीट पर सेट रहेगा, तभी सभी गुण-शक्तियाँ, दिव्य गुण, मन-बुद्धि-संस्कार अपने अपने मूल स्वरुप रहेंगे, आत्मा मालिक है। आत्मा मालिक की ऑर्डर से सभी गुण-शक्तियाँ चलती हैं, पर कब? जब आत्मा अपने मूल अवस्था में, मूल स्थिति में होगी, आत्मा की हर ऑर्डर, मन-बुद्धि-संस्कार और सभी गुण-शक्तियाँ

फ़ॉलो करेंगे, पर कब? जब आत्मा अपनी मूल अवस्था में होगी। आत्मा मालिक है, उसको कोई कर्म नहीं करने होते, उसका एक ही कर्म है, अपने मूल अवस्था में आना और मूल अवस्था में आने के बाद, आत्मा की हर ऑर्डर सभी गुण-शक्तियाँ, सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियाँ पालन करती हैं।

आत्मा अपने देह में आने के कारण, उस देह के संस्कारों के परवश होने के कारण, उन संस्कारों वश कर्म करती है। आत्मा को सबसे पहले इस शरीर से डिटैच होना पड़ेगा क्योंकि यह शरीर सिर्फ एक साधन है, इंस्ट्रुमेंट है, पार्ट बजाने के लिए। आत्मा को सदैव यह ज्ञात होना चाहिए, संगम युग में, मैं आत्मा इस तन में, जो हूँ, उसके पीछे का मेरा लक्ष्य क्या है, मुझे आत्मा का उद्देश्य क्या होना चाहिए, क्या इस तन को लेके मुझे अभी भी संसार में कुछ भोग भोगना है? क्या अभी भी इस तन को लेके संसार की संसारी बातों में अटकना है? क्या मुझे संसार करना है? हर कोई आत्मा अपने से यह सवाल अवश्य पूछे कि इस संगम युग में यह जो तन मुझे मिला है, वह तन मुझे किस उद्देश्य से मिला है? मेरा लक्ष्य क्या होना चाहिए? और मैं क्या कर रही हूँ? हर कोई सच्ची दिल से अपना लक्ष्य चेक करें। क्योंकि आपका जो लक्ष्य होगा, आपकी यात्रा उस ही दिशा में बढ़ती जाएगी। क्योंकि जो आपको लगता है कि यह आपका लक्ष्य है आत्मा की ऊर्जा उस दिशा में लगना शुरु होती है। तो हर कोई चेक करें संगम युग में मिला हुआ यह तन, उसका उद्देश क्या होना चाहिए? संसार करना या आत्म कल्यान करना, आत्म परिवर्तन करना? क्योंकि यह एक ही युग है, जिसमें आत्मा अपना कल्यान साध सकती है, अपना परिवर्तन कर सकती है, उस शरीर में उपस्थित रहकर। बाकी कोई युग में आत्मा अपना कल्यान या अपना परिवर्तन कभी नहीं कर सकती।

हर युग में आत्मा ने संसार ही किया है, संसार ही जिया है। सिर्फ एक संगम युग ही है जिसमें आत्मा को अपना संपूर्ण कल्याण करने का मौका मिला है। अपना संपूर्ण परिवर्तन करने का मौका

मिला है। पर यह कब होगा? जब हर कोई आत्मा का उद्देश स्पष्ट होगा, कि संगम युग में यह जो तन मुझे मिला है, यह किसलिए मिला है? यह जागृति आत्मा को कोई नहीं दे सकता।

परमात्मा से ज्ञान की समझ मिलती है, पर वह समझ हर किसी को अपने से लेनी होती है। परमात्मा हर प्रकार से हर बात को स्पष्ट करते है। पर आत्मा को वह समझ लेकर अपने उपर काम करना होगा। परिवर्तन होना, अपना कल्याण करना यह हर किसी की अपनी मर्जी है। जब स्वयं को अपनी कोई बातें सच में अच्छी नहीं लगती, कोई संस्कार जो अंदर है वह अच्छे नहीं लगते, जब उसकी समझ मिलती है, कि यह नहीं होना चाहिए, जब यह रियलाइजेशन आत्मा को होता है, तब ही आत्मा परिवर्तन की ओर चल पड़ेगी।

हर आत्मा को अपने से हर बात रियलाइज करनी होगी। यह जो मैं कर रही हूँ, क्या यह मैं सही कर रही हूँ? क्या यह मुझे करना चाहिए? इसका परिणाम क्या होगा? और यह कौन सा समय चल रहा है? और मैं क्या कर रही हूँ? जब हर आत्मा स्वयं से यह प्रश्न पूछेगी, उसको जवाब मिलता जायेगा, पर अगर आत्मा कि दिल सच्ची होगी तो। अगर दिल सच्ची नहीं होगी तो मायावी जवाब आते जायेंगे और आत्मा संसार में ही अटकती जाएगी। मायावी उत्तर क्या होंगे? घर परिवार को संभालना है, नौकरी धंदा करना है, यह करना है, हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? यह उत्तर देने वाला कौनसा अस्तित्व है? स्वयं चेक करें। क्योंकि हर युग में आत्मा ने यही किया है, पर अभी युग बदला है। संगम युग में आत्मा को सिर्फ अपना कल्याण और परिवर्तन ही करना है। संगम युग पूरा होने के बाद आत्मा को कितना भी रियलाइजेशन हो पर वह कुछ नहीं कर सकती। और आत्मा उस संगम युग के अंत तक अपनी अवस्था में जितना पहुंची है उसी अवस्था को लेकर वह अपना अगले युग में पद पाती है, उस अनुसार पार्ट बजाती है। इसलिए जो करना है वह अभी करना है।

अंत का समय पता भी चले फिर भी कुछ नहीं कर सकेंगे अगर अभी से अपने अंदर परिवर्तन करना शुरु नहीं किया होगा तो। परिवर्तन एक सेकंड की प्रोसेस है कि मुझे यह चाहिए, यह नहीं

चाहिए। यह परमात्मा की श्रीमत अनुसार, आज्ञा अनुसार यह है, तो यह मुझे चाहिए। जो मायावी है, विपरीत है वह मुझे त्यागना है और त्यागने के लिए बस एक संकल्प काफी होता है, जो आत्मा को अपनी सच्ची दिल से उठाना होगा।

तो आज का एक ही होमवर्क है – सभी आत्माएं अपने से पूछे कि आपको जो तन मिला है, इस तन को लेकर आपको क्या करना है? हर कोई अपने को चेक करें, सच में आप आत्मा क्या चाहती है? जो आपका सच्ची दिल का उत्तर होगा, उस दिशा में आप बढ़ते जाएंगे। परमात्मा की शक्ति कल्याण और परिवर्तन के लिए है, बाकी हर कोई चेक करें कि आप इस धरा पर क्यूं हो? आपका क्या लक्ष्य है? आपका क्या लक्ष्य होना चाहिए?

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः